राम, कृष्ण और शिव हिन्दुस्तान की उन तीन चीजों में हैं - मैं उनको आदमी कहूँ या देवता , इसके तो ख़ास मतलब नहीं होंगे - जिनका असर हिन्दुस्तान के दिमाग पर ऐतिहासिक लोगों से भी ज्यादा है । गौतम बुद्ध या अशोक ऐतिहासिक लोग थे । लेकिन उनके काम के किस्से इतने ज्यादा और इतने विस्तार में आपको नहीं मालूम हैं , जितने कि राम और कृष्ण और शिव के क़िस्से । कोई आदमी वास्तव में हुआ या नहीं , यह इतना बड़ा सवाल नहीं है , जितना यह कि उस आदमी के काम किस हद तक , कितने लोगों को मालूम हैं , और उनका असर है दिमाग़ पर । राम और कृष्ण तो इतिहास के लोग माने जाते हैं , हों या न हों , यह दूसरे दर्जे का सवाल है । मान लें थोडी देर के लिये कि वे उपन्यास के लोग हैं । शिव तो केवल एक किंवदंती के रूप में प्रचलित हैं । यह सही है कि कुछ लोगों ने कोशिश की है कि शिव को भी कोई समय और शरीर और जगह दी जाय । कुछ लोगों ने कोशिश की है यह साबित करने की कि वे उत्तराखंड के एक इंजीनियर थे जो गंगा को ले आये थे हिन्दुस्तान के मैदानों में ।

यह छोटे-छोटे सवाल हैं कि राम और कृष्ण और शिव सचमुच इस दुनिया में कभी हुए या नहीं । असली सवाल तो यह है कि इनकी जिन्दगी के किस्सों के छोटे-छोटे पहलू को भी ५ , १०,२०,५० हज़ार आदमी नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के करोड़ों लोग जानते हैं।वह हिन्दुस्तान के इतिहास के किसी और आदमी के बारे में नहीं कहा जा सकता । मैं तो समझता हूँ , गौतम बुद्ध का नाम भी हिन्दुस्तान में शायद ज्यादा लोगों को मालूम नहीं होगा ।उनके किस्से जानने वाले मुशकिल से हजार में १-२ मिल जाएँ तो मिल जाएँ। लेकिन राम और कृष्ण और शिव के किस्से तो सबको मालूम हैं । दिमाग पर असर - असर सिर्फ इसलिए नहीं है कि उनके साथ धर्म जुड़ा हुआ है । असर इसलिये है कि वे लोग लोगों के दिमाग में एक मिसाल की तरह आ जाते हैं, और जिन्दगी के हरेक पहलू और हरेक काम - काज के सिलसिले में वे मिसालें आँखों के सामने या दिमाग की आँखों के सामने खड़ी हो जाती हैं ।तब,चाहे जानबूझकर , और चाहे अनजान में , आदमी उन मिसालों के मुताबिक खुद भी अपने कदम उठाने लग जाता है। अगर मिसाल सोच-समझ कर दिमाग के सामने आये तो उसका इतना असर नहीं पड़ता जितना बिना सोचे दिमाग में आ जाये । बिना सोचे कोई मिसाल दिमाग में आ जाये, सिर्फ यही नहीं कि वह मिसाल हो , बल्कि छोटे-छोटे किस्से भी याद हैं जैसे कि राम ने परशुराम को क्या कहा और किस वक्त कितना कहा- यह एक-एक किस्सा मालूम है। या जब शूर्पणखा आयी थी तो राम और लक्ष्मण और शूर्पनखा में क्या-क्या बातचीत हुई , या जब भरत आये राम को वापस ले जाने के लिए तब उनकी आपस में क्या-क्या बातें हुईं- इन सबकी एक-एक तफ़सील , इसने यह कहा ,और उसने वह कहा,मालूम है। इसी तरह से कृष्ण और अर्जुन की बातचीत और इसी तरह से शिव के किस्से हिन्दुस्तानी के दिमाग की सतह पर खुदे हुए रहते हैं। एक तो हुआ किस्सों का मालूम होना , दूसरे, किस्सों का दिमाग की सतह पर खुद जाना ,

तो फिर , वह हमेशा मिसाल की तरह दिमाग की आँखों के सामने रहते हैं , और किसी भी काम पर उनका असर पड़ा करता है ।

यों , हरेक देश का अपना इतिहास होता है । इतिहास की घटनाएँ हैं , राजनीतिक ,साहित्यिक , और दूसरी । इतिहास की घटनाओं की एक लम्बी जंजीर होती है और उनको लेकर कोई सभ्यता और संस्कृति बना करती है। उनका दिमाग पर असर रहता है । लेकिन इससे अलग , एक और जंजीर , और वह क़िस्से-कहानियों वाली , ' हितोपदेश ' और ' पंचतंत्र ' वाली । मैं समझता हूँ , आपमें से भी क़रीब-क़रीब सभी को मालूम होगा कि किस तरह गंगदत्त नाम के मेढक ने प्रियदर्शन नाम के साँप को एक राजदूत के जरिये कहलाया था कि - किस्से बड़े सुहावने और नाम बडे सुहावने हुआ करते हैं,मेढक का नाम गंगदत्त और साँप का नाम प्रियदर्शन ! वे दूत भेजते हैं और दूत से बातचीत हुआ करती है - देखो, गंगदत्त इतना बेवकूफ़ नहीं है कि अब फिर से कुएँ में आए , क्योंकि भूखे लोगों का कोई धर्म नहीं हुआ करता है । ' हितोपदेश ' और ' पंचतंत्र ' के इन किस्सों से करोड़ों बच्चों के दिमाग पर कुछ चीजें खुद जाया करती है और उसी पर नीतिशास्त्र बना करता है ।

मैं जिनका जिक्र आज कर रहा हूँ , वे ऐसे किस्से नहीं हैं । उनके साथ नीतिशास्त्र सीधे नहीं जुड़ा हुआ है । ज़्यादा से ज़्यादा आप यह कह सकते हो कि किसी भी देश की हँसी और सपने ऐसी महान किंवदंतियों में खुदे रहते हैं । हँसी और सपने , इन दो से और कोई चीज़ बड़ी दुनिया में हुआ नहीं करती है । जब कोई राष्ट्र हँसा करता है तो वह खुश होता है , उसका दिल चौड़ा होता है । और जब कोई राष्ट्र सपने देखता है , तो वह अपने आदर्शों में रंग भर कर क़िस्से बना लिया करता है ।

राम, कृष्ण और शिव ये कोई एक दिन के बनाये हुए नहीं हैं ।इनको आपने बनाया । इन्होंने आपको नहीं बनाया । आमतौर से तो आप यही सुना करते हो कि राम और कृष्ण और शिव ने हिन्दुस्तान या हिन्दुस्तानियों को बनाया ।किसी हद तक शायद यह बात सही भी हो,लेकिन ज्यादा सही यह बात है कि करोड़ों हिन्दुस्तानियों ने , युग-युगान्तर के अन्तर में , हजारों बरस में , राम , कृष्ण और शिव को बनाया । उनमें अपनी हँसी और सपने के रंग भरे और तब राम और कृष्ण और शिव जैसी चीजें सामने हैं ।

राम और कृष्ण तो विष्णु के रूप हैं और शिव महेश के । मोटी तौर से लोग यह समझ लिया करते हैं कि राम और कृष्ण तो रक्षा या अच्छी चीजों की हिफाज़त के प्रतीक हैं और शिव विनाश या बुरी चीजों के नाश के प्रतीक हैं । मुझे ऐसे अर्थ में नहीं पड़ना है । कुछ और हैं जिन्हें मजा आता है हरेक किस्से में अर्थ ढूँढने में । मैं अर्थ नहीं ढूँढूँगा । मुमकिन है सारा भाषण बेमतलब हो , और जितना बेमतलब होगा उतना ही मैं उसे अच्छा समझूँगा , क्योंकि हँसी और सपने तो बेमतलब हुआ करते हैं ।फिर भी , असर उनका कितना पड़ता है ? छाती चौड़ी होती है । अगर कोई कौम

मौके-मौके पर ऐसी किंवदंतियों को याद करके चौड़ी कर लेती हो तो फिर उससे बढ़ कर क्या हो सकता है ? कोई यह न सोचे कि इस विषय से मैं कोई अर्थ निकालना चाहता हूँ - राजनीतिक अर्थ या दार्शनिक अर्थ या और कोई समाज के गठन का अर्थ । जहाँ तक बन पड़े , पिछले हज़ारों बरसों में जो हमारे देश के पुरखों और हमारी क़ौम ने इन तीनों किंवदंतियों में अपनी बात डाली है , उसको सामने लाने की कोशिश करूँगा ।

राम की सबसे बड़ी महिमा उनके उस नाम से मालूम होती है , जिसमें उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कह कर पुकारा जाता है । जो मन में आया सो नहीं कर सकते । राम की ताकत बँधी हुई है , उसका दायरा खिंचा हुआ है । राम की ताकत पर कुछ नीति की या शास्त्र की या धर्म की या व्यवहार की या , अगर आप आज की दुनिया का एक शब्द ढूँढें तो , विधान की मर्यादा है ।जिस तरह किसी भी कानून की जगह , जैसे विधान सभा या लोकसभा पर विधान रोक लगा दिया करता है , उसी तरह से राम के कामों पर रोक लगी हुई है ।वह रोक क्यों लगी हुई है और किस तरह की है , इस सवाल में अभी आप मत पडिए ।लेकिन इतना कह देना काफ़ी होगा कि पुराने दक़ियानूसी लोग भी , जो राम और कृष्ण को विष्णु का अवतार मानते हैं , राम को सिर्फ़ ८ कलाओं का अवतार मानते हैं और कृष्ण को १६ कलाओं का अवतार । कृष्ण सम्पूर्ण और राम अपूर्ण । अपूर्ण शब्द सही नहीं होगा ,लेकिन अपना मतलब बताने के लिए मैं इस शब्द का इस्तेमाल किये लेता हूँ । ऐसे मामलों में , कोई अपूर्ण और सम्पूर्ण नहीं हुआ करता ,लेकिन ज़ाहिर है, जब एक में ८ कलाएँ होंगी और दूसरे में १६ कलाएँ होंगी , तो उसमें कुछ नतीजे तो निकल ही आया करेंगे ।

' भागवत ' में एक बड़ा दिलचस्प किस्सा है । सीता खोयी थी तब राम को दु:ख हुआ था । दु:ख ज़रा ज़्यादा हुआ । किसी हद तक मैं समझ भी सकता हूँ , गो कि लक्ष्मण भी वहाँ पर था और देख रहा था । इसलिए राम का पेड़ों से बात करना और रोना वगैरह कुछ ज्यादा समझ में नहीं आता ।अकेले राम रो लेते , तो बात दूसरी थी , लेकिन लक्ष्मण के देखते हुए पेड़ से बात करना और रोना वगैरह कुछ ज्यादा बढ़ गयी बात । कौन जाने , शायद वाल्मीकि और तुलसीदास को यही पसन्द रहा हो । लेकिन याद रखना चाहिए कि वाल्मीकि और तुलसीदास में भी फर्क है । वाल्मीकि की सीता और तुलसी की सीता , दोनों में बिलकुल अलग अलग दुनिया का फर्क है ।अगर कोई इस पर भी किताब लिखना शुरु करे कि सीता हिन्दुस्तान में तीन - चार हजार बरस के दौरान में किस तरह बदली , तो वह बहुत ही दिलचस्प किताब होगी । अभी तक ऐसी किताबें लिखी नहीं जा रही हैं लेकिन लिखी जानी चाहिए । खैर , राम रोये , पेडों से बोले , दुखी हुए , और उस वक्त चन्द्रमा हँसा था । जाने क्यों चन्द्रमा को ऐसी चीजों में दिलचस्पी रहा करती है कि वह हँसा करता है ,ऐसा लोग कहते हैं । वह खूब हँसा । कहा, देखो तो सही , पागल कैसे रो रहा है ?

राम विष्णु के अवतार तो थे ही , चाहे ८ ही कला वाले । विष्णु को बात याद थी । न जाने कितने बरसों के बाद कुछ लोग कहते हैं , लाखों बरसों के बाद , हजारों बरसों के बाद , लेकिन मेरी समझ में , शायद , हजार दो हजार बरस के बाद - जब कृष्ण के रूप में वे आये , तो फिर एक दिन ,हजारों गोपियों के बीच कृष्ण ने भी अपनी लीला रचायी । वे १६,००० थीं या १२,००० थीं, इसका मुझे ठीक अन्दाज नहीं है । एक - एक गोपी के अलग-अलग से , कृष्ण सामने आये और बार-बार चन्द्रमा की तरफ देख कर ताना मारा , बोलो, अब हँसो । जो चन्द्रमा राम को देख कर हँसा था जब राम रोये थे , उसी चन्द्रमा को उँगली दिखा कर कृष्ण ने ताना मारा कि अब जरा हँसो , देखो तो सही । १६ कला और ८ कला का यह फर्क रहा ।

राम ने मनुष्य की तरह प्रेम किया । मैं इस समय बहस में बिलकुल नहीं पड़ना चाहता कि सचमुच कृष्ण ने ऐसा प्रेम किया या नहीं किया । यह बिलकुल फिजूल बात है । मैं शुरु में ही कह चुका हूँ कि ऐसी कहानियों का असर ढूँडा जाता है , यह देख कर नहीं कि वे सच्ची हैं या झूठी , लेकिन यह देखकर कि उसमें कितना सच भरा हुआ है ,और दिमाग पर उसका कितना असर पड़ता है ।यह सही है कि कृष्ण ने प्रेम किया, और ऐसा प्रेम किया कि बिलकुल बेरोये रह गये ,और तब चन्द्रमा को ताना मारा । राम रोये तो चन्द्रमा ने विष्णु को ताना मारा,कृष्ण १६,००० गोपियों के बीच में बाँसुरी बजाते रहे ,तो चन्द्रमा को विष्णु ने ताना मारा । ये किस्से मशहूर हैं। इसी से आप और नतीजे निकालिये।

कृष्ण झूठ बोलते हैं , चोरी करते हैं, धोखा देते हैं, और जितने भी अन्याय के अधर्म के काम हो सकते हैं , वे सब करते हैं। जो कृष्ण के सच्चे भक्त होंगे , मेरी बात का बिलकुल भी बुरा न मानेंगे । मुमकिन है कि एकाध नकली भक्त गुस्सा कर कर जाए। एक बार जेल में मेरा साथ पड़ा था मथुरा के एक बहुत बड़े चौबे जी के साथ और मथुरा तो फिर मथुरा ही है। जितना ही हम उसको चिढ़ाना चाहें, वे खुद अपने आप कह दें कि हाँ वह तो माखनचोर था । हम कहें कृष्ण धोखेबाज था, तो वे जरूर कृष्ण का कोई न कोई किस्सा धोखे का सुना दें । जो कृष्ण के सच्चे उपासक हैं , उनको तो मजा मिलता है कृष्ण की झूठ , दगा और धोखेबाजी और लम्पटपन को याद करके । सो क्यों ? १६ कला हैं । मर्यादा नहीं ,सीमा नहीं , विधान नहीं है , यह ऐसी लोकसभा है जिसके ऊपर विधान की कोई रुकावट नहीं है , मन में आये सो करे ।

धर्म की विजय के लिये अधर्म से अधर्म करने को तैयार रहने का प्रतीक कृष्ण है । मैं यही तो किस्से नहीं बतलाऊँगा , पर आप खुद याद कर सकते हो कि कब सूरज को छुपा दिया जब कि वह सचमुच नहीं छुपा था , कब एक जुमले के आधे हिस्से को जरा जोर से बोलकर और दूसरे हिस्से को धीमे बोल कर कृष्ण झूठ बोल गये । इस तरह की चालबाजियाँ तो कृष्ण हमेशा ही किया करते थे । कृष्ण १६ कलाओं के अवतार किसी चीज की मर्यादा नहीं ।राम मर्यादित अवतार , ताकत के ऊपर

सीमा जिसे वे उलाँघ नहीं सकते थे। कृष्ण बिना मर्यादा का अवतार ।लेकिन इसके यह मानी नहीं कि जो कोई झूठ बोले और धोखा करे वही कृष्ण हो सकता है । अपने किसी लाभ के लिए नहीं,अपने किसी राग के लिए नहीं ।राग शब्द बहुत अच्छा शब्द है हिन्दुस्तान का ।मन के अन्दर राग हुआ करते है, राग चाहे लोभ के हों,चाहे क्रोध के हों ,चाहे ईर्ष्या के हों, राग होते हैं ।यह सब , वीतराग भय ,क्रोध जिसकी चर्चा हमारे कई ग्रन्थों में मिलती हैं, भय, क्रोध , राग से परे ।धोखा,झूठ,बदमाशी और लम्पटपन कृष्ण का , एक ऐसे आदमी का था ,जिसे अपना कोई फायदा नहीं ढूँढना था,जिसे कोई लोभ नहीं था,जिसे ईर्ष्या नहीं थी,जिसे किसी के साथ जलन नहीं थी, जिसे अपना कोई बढावा नहीं करना था । यह चीज मुमकिन है या नहीं, इस सवाल को आप छोड़ दीजिये। असल चीज है,दिमाग पर असर कि यह सम्भव है या नहीं । हम लोग इसे सम्भव मानते भी हैं , और मैं खुद समझता हूँ कि अगर पूरा नही तो अधूरा , किसी,न किसी रूप में यह चीज़ सम्भव है ।

कभी - कभी आज के जमाने में भी , राम और कृष्ण की तसवीरें , हिन्दुस्तान के बड़े लोगों को समझते हुए , आपकी आँखों के सामने नाचा करती होंगी । न नाचती हों तो अब आगे से नाचेंगी । एक बार मेरे दोस्त ने कहा था , गाँधी जी के मरने पर , कि साबरमती या काठियावाड़ की नदियों का बालक जमुना के किनारे जलाया गया , और जमुना का बालक काठियावाड़ की नदियों के किनारे जलाया गया था । फ़ासला दोनों में हजारों बरस का है । काठियावाड़ की नदियों का बालक और जमुना नदी का बालक , दोनों में , शायद , इतना सम्बन्ध न दीख पाता होगा , मुझे भी भी नहीं दीखता था कुछ अरसे पहले तक , क्योंकि गाँधीजी ने खुद राम को याद किया और हमेशा याद किया ।जब कभी गाँधी जी ने किसी का नाम लिया , तो राम का लिया ।कृष्ण का नाम भी ले सकते थे । और शिव का नाम भी ले सकते थे वे । लेकिन नहीं । उन्हें एक मर्यादित तसवीर हिन्दुस्तान के सामने रखनी थी , एक ऐसी ताक़त जो अपने ऊपर नीति , धर्म या व्यवहार की रुकावटों को रखे - मर्यादा पुरुषोत्तम का प्रतीक ।

मैंने भी सोचा था , बहुत अरसे तक , कि शायद गाँधी जी के तरीके कुछ मर्यादा के अन्दर रह कर ही हुए । ज्यादातर यह बात सही भी है लेकिन पूरी सही भी नहीं है । और यह असर दिमाग पर तब पड़ता है , जब आप गाँधी जी के लेखों और भाषणों को एक साथ पढें । अंग्रेजों और जर्मनियों की लड़ाई के दौरान में हर हफ़्ते 'हरिजन' में उनके लेख या भाषण छपा करते थे । हर हफ़्ते उनकी जो बोली निकलती थी , उसमें इतनी ताक़त और इतना माधुर्य होता कि मुझ जैसे आदमी को भी समझ में नहीं आता था कि बोली शायद बदल रही है, हर हफ़्ते । बोली तो खैर हमेशा बदला करती है , लेकिन उसकी बुनियादें भी बदल गयी ,ऐसा लगता था कृष्ण अपनी बोली की बुनियाद बदल दिया करते थे राम नहीं बदलते थे । कुछ महीने पहले का किस्सा है कि एकाएक मैंने , लड़ाई के

दिनों में गाँधी जी ने जो कुछ लिखा था हर हफ़्ते लगातार , उसमें से ६ महीनों की बातें एक साथ जब पढ़ीं , तब पता चला कि किस तरह बोली बदल जाती थी । जिस चीज़ को आज अहिन्सा कहा , उसीको २-३ महीने बाद हिंसा कह डाला , और उसका उलट , जिसे हिंसा कहा उसे अहिंसा कह डाला । वक़्ती तौर पर अपने संगठन के नीति - नियमों के मुताबिक जाने के लिए और अपने आदमियों को मदद पहुँचाने के लिए बुनियादी सिद्धान्तों के बारे में भी बदलाव करने के लिए वे तैयार रहते थे । यह किया उन्होंने लेकिन ज्यादा नहीं किया।

मैं यह नहीं कहना चाहूँगा कि गाँधी जी ने कृष्ण का काम बहुत ज़्यादा किया , लेकिन काफ़ी किया । इससे कहीं यह न समझना कि गाँधी जी मेरी नज़रों में गिर गये , कृष्ण मेरी नज़रों में कहाँ गिर गये ? ये तो ऐसी चीजें हैं जिनका सिर्फ़ सामना करना पड़ता है । गिरने - गिराने का तो कोई सवाल है नहीं । लेकिन यह कि आदमी को अपनी कसौटियाँ हमेशा पैनी और साफ़ रखनी चाहिए कि जिससे पता चल सके कि जिस किसी चीज को उसने आदर्श बनाया है या जिन सिद्धान्तों को अपनाया है , उन्हें वह सचमुच लागू किया करता है या नहीं । जैसे , साधनों की शुचिता या जिस तरह के मक़सद हों उसी तरह के तरीके हों , इस सिद्धान्त को गाँधी जी ने न सिर्फ़ अपनाया बल्कि बार - बार दुहराया । शायद को इसीको उन्होंने अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा मक़सद समझा कि अगर मक़सद अच्छे बनाने हैं तो तरीके भी अच्छे बनाने पडेंगे । लेकिन आपको याद होगा कि किस तरह बिहार के भूकम्प को अछूत-प्रथा का नतीजा बता कर उन्होंने एक अच्छा मक़सद हासिल करना चाहा था कि हिन्दुस्तान से अछूत - प्रथा ख़तम हो । बहुत बढ़िया मक़सद था , इसमें कोई शक नहीं । उन दिनों जब रवीन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गाँधी में बहस हुई थी , तो मुझे एकाएक लगा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर क्यों यह तीन - पाँच कर रहे हैं ।आखिर गाँधीजी कितना बड़ा मक़सद हासिल कर रहे हैं । जाति - प्रथा मिटाना , हरिजन और अछूत-प्रथा मिटाना , इससे बड़ा और क्या मक़सद हो सकता है । लेकिन उस मक़सद को हासिल करने के लिए कितनी बड़ी झूठ बोल गये कि बिहार का भूकम्प हुआ इसलिए कि हिन्दुस्तानी लोग आपस में अछूत-प्रथा चलाते हैं । भला भूकम्प और तारे और आसमान , पानी और सूरज वगैरह को भी इससे क्या पड़ा है कि हिन्दुस्तान में अछूत-प्रथा चलती है या नहीं ।

मैं इस समय बुनियादी तौर से राम और कृष्ण के बीच के इस फ़र्क को सामने रखना चाहता हूँ कि एक तो मर्यादा पुरुषोत्तम है , एक की ताक़तों के ऊपर रोक है , और दूसरा बिना रोक का , स्वयंभू है । यह सही है कि वह राग से परे है , राग से परे रह कर सब कुछ कर सकता है और उसके लिए नियम और उपनियम नहीं ।

शिव एक निराली अदा वाला है । दुनिया भर में ऐसी कोई किंवदन्ती नहीं जिसकी न लम्बाई है , न चौड़ाई है और न मोटाई । एक फ्रांसीसी लेखक ने ने शिव के के बारे में एक बार कहा था कि वह

तो ' नॉन डाईमेंशनल मिथ ' है , (अंग्रेजी शब्द है ,फ्रांसीसी नहीं यानी ऐसी किंवदन्ती जिसकी कोई सीमा नहीं है , जिसकी कोइ हदें नहीं हैं - न लम्बाई , न चौड़ाई , न मोटाई ।) किंवदन्तियाँ दुनिया में और जगह भी हैं , खास तौर से पुराने मुल्कों में , जैसे ग्रीस आदि में बहुत हैं । कहाँ नहीं हैं ? बिना किंवदन्तियों के कोई देश रहा ही नहीं , और जितने पुराने देश हैं उनमें किंवदन्तियाँ ज्यादा हैं ।मैंने शुरु में कहा था कि एक तरफ ' हितोपदेश ' और ' पंचतंत्र ' की गंगदत्त और प्रियदर्शन जैसी बच्चों की कहानियाँ हैं, तो दूसरी तरफ , हजारों बरस के काम के नतीजे के स्वरूप कुछ लोगों में कौम की हँसी और सपने भरे हुए हैं , ऐसी किंवदन्तियाँ हैं ।

शिव ही एक ऐसी किंवदन्ती है जिसका न आगा है न पीछा । यहाँ तक कि वह किस्सा मशहूर है कि जब ब्रह्मा और विष्णु आपस में लड़ गये - ये देवी - देवता खूब लड़ा करते हैं , कभी-कभी आपस में - तो शिव ने उनसे कहा लड़ो मत । जाओ , तुममें से एक मेरे सिर का पता लगाए और दूसरा मेरे पैर का पता लगाए और फिर लौट कर आ कर मुझसे कहो ! जो पहले पता लगा लेगा , उसकी जीत हो जाएगी । दोनों पता लगाने निकले । शायद अब तक पता लगा रहे हों ! जो ऐसे किस्से कहानियाँ गढ़ा करते हैं , उनके लिए वक़्त का कोई मतलब नहीं रहता । उसके लिए १ मिनट के मानी १ करोड़ बरस । कोई हिसाब और गणित वगैरह क सवाल नहीं उठता उनके सामने । खैर , किस्सा यह है कि बहुत अरसे के बाद , न जाने कितने लाखों बरसों के बाद ब्रह्मा और विष्णु दोनों लौट कर आये और शिव से बोले कि भई , पता तो नहीं लगा । तब उन्होंने कहा कि फिर क्यों लड़ते हो ? फ़िजूल है ।

यह असीमित किंवदन्ती है । इसके बारे में , बार - बार मेरे दिमाग में एक ख़याल उठ आता है कि दुनिया में जितने भी लोग हैं , चाहे ऐतिहासिक और चाहे किंवदन्ती के , उन सबके कर्मों को समझने के लिए कर्म और फल , कारण और फल देखना पड़ता है । उनके जीवन में ऐसी घटनाएँ हैं कि जिन्हें एकाएक नहीं समझा जा सकता । वे अजीब-सी मालूम पड़ती हैं । उन घटनाओं को समझने के लिए पहले का कारण ढूँढना पड़ता है और बाद का फल ढूँढना पड़ता है । तब जा करके वे सही मालूम पड़ती हैं । आप भी अपनी आपस की घटनाओं को सोच लेना । आपके आपस में रिश्ते होंगे - बड़े लोगों से मतलब यह नहीं कि आप छोटे लोग हैं , बड़े लोगों के मानी सिर्फ़ यह हैं कि जिनका नाम हो जाया करता है , और कोई मतलब नहीं है , चाहे वे बदमाश ही लोग क्यों न हों , और आमतौर से , बदमाश लोगों का ही नाम हुआ करता है । ख़ैर , बड़े लोग हों , छोटे लोग हों,कोई हों ,उनके आपसी रिश्ते होते हैं । उन आपसी रिश्तों के प्रकाश की एक श्रृंखला होती है - एक कड़ी के बाद एक कड़ी,एक कड़ी के बाद एक कड़ी ।अगर कोई चाहे कि उनमें से एक ही कड़ी को पकड़ कर पता लगाये कि आदमी अच्छा है या बुरा , तो ग़लती कर जायेगा , क्योंकि क्योंकि उस कड़ी के पहले वाली कड़ी कारण के रूप में है और उसके बाद वाली कड़ी फल के रूप में है । क्यों किया ? कई बार ऐसे काम मालूम होते हैं जो बज़ाते खुद बुरे हैं , गंदे हैं या झूठे हैं ।उदाहरण , मैंने कृष्ण के के

लिए कहा । वह सबके लिए हैं । लेकिन वह काम क्यों हुआ , उसका कारण क्या था और उसको करने के बाद परिणाम क्या निकला , वह सब देखना पड़ता है ।कारण और परिणाम देखना , हर आदमी और हर किस्से और सीमित किंवदन्ती को समझने के लिए जरूरी होता है ।

शिव ही एक ऐसी किंवदन्ती है जिसका हरेक काम,बजाते,खुद,अपने औचित्य को अपने-आप में रखता है । कोई भी काम आप शिव का ढूँढ लो, वह उचित काम होगा ।उनके लिए पहले की कोई कड़ी नहीं ढूँढनी पड़ेगी और न बाद की कोई कड़ी ।क्यों शिव ने ऐसा किया , उसका क्या नतीजा निकला , यह सब देखने की कोई जरूरत नहीं होगी । औरों के लिए इसकी जरूरत पड़ जाएगी । राम के लिए जरूरत पड़ेगी , कृष्ण के लिए जरूरत पड़ेगी,दुनिया में हरेक आदमी के लिए इसकी जरूरत पड़ेगी,और जो दुनिया भर के किस्से हैं उनके लिए जरूरत पड़ेगी । क्यों उसने ऐसा किया ? पहले की बात याद करनी होगी कि क्या बात हुई,क्या कारण था,किस लिए उसका यह काम हुआ और फिर उसके क्या नतीजे निकले। हमेशा दूसरे लोगों के बारे में कर्म और फल की एक पूरी कड़ी बँधती है। लेकिन मुझे तो,ढूँढने पर भी,शिव का ऐसा कोई काम नहीं मालूम पड़ा कि मैं कह सकूँ कि उन्होंने क्यों ऐसा किया , उसका कारण क्या था , ढूँढो,बाद में उसका क्या परिणाम निकला । यह चीज़ बहुत बड़ी है ।

आज की दुनिया में प्राय: सभी लोग अपने मौजूदा तरीके को , गंदे कामों को उचित बताते हैं,यह कह कर कि आगे चल कर उसके परिणाम अच्छे निकलेंगे । वे एक कड़ी बाँधते हैं ।आज चाहे वे गंदे काम हों, लेकिन हमेशा उसकी कड़ी जोड़ेंगे कि भविष्य में कुछ ऐसे नतीजे उसके निकलेंगे कि वह काम अच्छे हो जाएँगे । कारण और फल की खुद ऐसी श्रृंखला अपने दिमाग में बाँधते हैं,और दुनिया के दिमाग में बाँधते हैं कि किसी भी काम के लिए कोई कसौटी नहीं बना सकती मानवता ।आखिर कसौटियाँ होनी चाहिए । काम अच्छा है या बुरा,इसका कैसे पता लगाएँगे ।कोई कसौटी होनी ही चाहिए ।अगर एक बाद एक कड़ी बाँध देते हो तो कोई कसौटी नहीं रह जाती । फिर तो मनमानी होने लग जाती है ,क्योंकि जितनी लम्बी जंजीर हो जायेगी, उतना ही ज्यादा मौका मिलेगा लोगों को अपनी मनमानी बात उसके अन्दर रखने का । ऐसा दर्शन बनाओ,ऐसा सिद्धान्त बनाओ कि जिसमें मौजूदा घतनाओं को जोड़ा दिया जाये किसी बड़ी, दूर भविष्य की घटना से,तो फिर, मौजूदा घटनाओं में कितना ही गंदापन रहे, लेकिन उस दूर के भविष्य की घटना , जो होने वाली है,जिसके बारे में कोई कसौटी नहीं बन सकती कि वह होगी या नहीं होगी इसके बारे में बहुत हद तक आदमी को मान कर चलना पड़ता है कि वह शायद होगी,उसको ले कर मौजूदा घटनाओं का औचित्य या अनौचित्य ढूँढा जाता है । और यह हमेशा हुआ है।मैं यहाँ मौजूदा दुनिया के किस्से तो बताऊँगा नहीं,लेकिन इतना आपसे कह दूँ कि प्राय:,यह जरा अति बोली है,लेकिन

प्राय: हरेक राजनीति की,समाज की,अर्थशास्त्र की घटना ऐसी ही है कि जिसका औचित्य या तो कोई पुरानी बड़ी या कोई आगे आने वाली किसी जंजीर के सथ बाँध दिया जाता है ।

यहाँ मैं सिर्फ कृष्ण का ही किस्सा बता देता हूँ कि अश्वत्थामा के बारे में धीमे बोलना या ज़ोर से बोलने के औचित्य और अनौचित्य को,कौरव-पांडव की लड़ाई से बहुत पुराना किस्सा,बहुत आगे आने वाली घटना के साथ जोड़ दिया जाता है। यह बुरा खुद काम है,मान कर चलना पड़ता है । लेकिन उस बुरे काम का ऐसा चित्य साबित हो जाता है पुराने कारन से और भविष्य में आने वाले परिणाम से। आप शिव का ऐसा कोई किस्सा नहीं पाओगे । शिव का हरेक किस्सा अपने-आप उचित है।उसीके अन्दर सब कारण और सब फल भरे हुए हैं,जिससे मालूम पड़ता है कि वह सही है,ठीक है,उसमें कोई ग़लती हो नहीं सकती ।

मुझे शिव के किस्से यहाँ नहीं सुनाने हैं । मशहूर तो बहुत हैं । शायद पार्वती को अपने कंधे पर लादे फिरने वाला किस्सा,इतनी तफ़सील में कि पार्वती के शरीर का कौन-सा अंग कहाँ गिरा और कौन-सा मन्दिर कहाँ बना,सबको मालूम है। गौतम बुद्ध और अशोक के बारे में या अकबर के बारे में ऐसे किस्से नहीं मशहूर हैं । शिव के वे सब किस्से बहुत मशहूर हैं और अच्छी तरह से लोगों को मालूम हैं । अगर नहीं मालूम हों तो जरा ये किस्सा सुन लिया करो,अभी आपकी दादी जिन्दा होती तो उससे। दादी जिन्दा न हो तो नानी जिन्दा होगी,कोई न कोई होंगी,और अगर वह भी न हो,तो अपनी बीबी से सुन लिया करो ।

शिव का कोई भी किस्सा अपने आप उचित है । ऐसा लगता है कि जैसे किसी आदमी की जिन्दगी में चाहें हजारों घटनाएँ हुई हों और उनमें से एक - एक घटना खुद एक जिन्दगी है । उसके लिए पहले की दूसरी घटना और आगे की दूसरी घटना की कोई जरूरत नहीं रहती । शिव बिना सीमा की किंवदन्ती हैं और बहुत से मामलों में छाती को बहुत चौड़ा करने वाली , और उसके साथ-साथ आदमी को एक उँगली की तरह रास्ता दिखाने वाली कि जहाँ तक बन पड़े , तुम अपने हरेक काम को बिना पहले के कारण और बिना आगे के फल को देखे हुए भी उचित बनाओ ।

हो सकता है , राम और कृष्ण और शिव , इन तीनों को लेकर कइयों के दिमाग में अलगाव की बातें भी उठती हों। मैं आपके सामने अभी एक विचार रख रहा हूँ । जरूरी नहीं है कि इसको आप मान ही लें । हरेक चीज को मान लेने से ही दिमाग नहीं बढ़ा करता। उसको सुनना, उसको समझने की कोशिश करना और फिर उसको छोड़ देने से भी कई दफ़े , दिमाग आगे बढ़ा करता है ।मैं खुद भी इस बात को पूरी तरह से अपनाता हूँ सो नहीं । एकाएक एक बार मैंने जब १९५१-५२ के आम चुनावों के नतीजे पर सोचना शुरु किया तो मेरे दिमाग में एक अजीब-सी बात आई । आपको याद होगा कि १९५१-५२ में हिन्दुस्तान में आम चुनावों में एक ऐसा इलाका ऐसा था कि जहाँ

कम्युनिस्ट जीते थे , दूसरा इलाका ऐसा था जहाँ सोशलिस्ट जीते थे,तीसरा इलाका ऐसा था जहाँ धर्म के नाम पर कोई न कोइ संस्था जीती थी । यों,सब जगह कांग्रेस जीती थी और सरकार उसीकी रही। मैं इस वक्त सबसे बड़ी पार्टी की बात नहीं कर रहा हूँ- नम्बर दो पार्टी की बात कर रहा हूँ । सारे देश में नम्बर १ पार्टी तो कांग्रेस पार्टी रही लेकिन हिन्दुस्तान के इलाके कुछ ऐसे साफ-से थे जहाँ पर ये तीनों पार्टियाँ जीतीं,अलग -अलग, यानी कहीं पर कम्युनिस्ट नम्बर २ पर रहे,कहीं पर सोशलिस्ट नम्बर २ पर रहे और कहीं पर ये जनसंघ,रामराज्य परिषद वगैरह मिल-मिला कर इन सबको तो एक ही समझना चाहिए- नम्बर २ रहे। मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सही है । मुमकिन है,इसके ऊपर अगर हिन्दुस्तान के कॉलेज और विश्वविद्यालय जरा दिमाग कुछ चौड़ा करके देखते- कुछ तफ़रीही दिमाग से क्योंकि तफ़रीह में भी चीजें की जाती हैं,चाहे वे सही निकलें,न निकलें- तो हिन्दुस्तान के नक्शे के ३ हिस्से बनाते । एक नक्शा वह , जहाँ राम सबसे ज्यादा चला हुआ है , दूसरा वह, जहाँ कृष्ण सबसे ज्यादा चला हुआ है,तीसरा वह,जहाँ शिव सबसे ज्याद चला हुआ है। मैं जब राम,कृष्ण , और शिव कहता हूँ तो जाहिर है,उनकी बीबियों को शामिल कर लेता हूँ । उनके नौकरों को भी शामिल कर लेना चाहिए, क्योंकि ऐसे इलाके हैं जहाँ हनुमान चलता है जिसके साफ़ मानी हैं कि वहाँ राम चलता है,ऐसे इलाके हैं जहाँ काली और दुर्गा चलती हैं,इसके साफ़ मानी हैं कि वहाँ शिव चलता है । हिन्दुस्तान के इलाके हैं जहाँ पर इन तीनों ने अपना-अपना दिमागी साम्राज्य बना रखा है । दिमागी साम्राज्य भी रहा करता है, विचारों का, किंवदन्तियों का ।

मोटी तौर पर शिव का इलाका वह इलाका था जहाँ कम्युनिस्ट नम्बर २ हुए थे , मोटी तौर पर । उसी तरह ,कृष्ण का इलाका वह था जहाँ संघ और रामराज्य परिषद वाले नम्बर २ हुए थे । मोटी तौर पर राम का इलाका वह था जहाँ सोशलिस्ट नमबर २ हुए थे । मैं मानता हूँ कि मैं खुद चाहूँ तो इस विचार को एक मिनट में तोड़ सकता हूँ,क्योंकि ऐसे बहुत से इलाके मिलेंगे जो जरा दुविधा के रहते हैं। किसी बड़े खयाल को तोड़ने के लिए छोटे-छोटे अपवाद निकाल देना कौन बड़ी बात है । खैर,मोटी तौर पर मुझे ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान की किंवदन्तियों के इन तीन साम्राज्यों के मुताबिक ही हिन्दुस्तान की जनता ने अपनी विरोधी शक्तियों को चुनने की कोशिश की । आप कह सकते हैं अभी तो तुमने शिव की बड़ी तारीफ़ की थी। तुम्हारा यह शिव कैसा निकला। जहाँ पर शिव की किंवदन्ती का साम्राज्य है, वहाँ तो कम्युनिस्ट जीत गये। तो,फिर,मुझे यह भी कहना पड़ता है कि जरूरी नहीं कि इन किं किंवदन्तियों के अच्छे ही असर पड़ते हैं,सब तरह के असर पड़ सकते हैं ।

शिव अगर नीलकंठ हैं और दुनिया के लिए अकेले जहर को अपने गले में बाँध सकते हैं,तो उसके साथ-साथ धतुरा खाने और पीने वाले भी हैं। शिव की दोनों तसवीरें साथ-साथ जुड़ी हुई हैं। मान लो , थोड़ी देर के लिए,, वे धतूरा न भी खाते रहे हों,फिर से बता दूँ कि ये सवाल सच्चाई और झुठाई के

नहीं हैं । यह तो सिर्फ किसी आदमी के दिमाग का एक नक्शा है । हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग समझते हैं कि शिव धतूरा पीते हैं,शिव की पलटन में लूले-लँगड़े हैं, उसमें तो जानवर भी हैं,भूत-प्रेत भी हैं,और सब तरह की बातें जुड़ी हुई हैं। लूले-लँगड़े,भूखे के मानी क्या हुए? गरीबों का आदमी ।

शिव का वह किस्सा भी आपको याद होगा कि शिव ने सती को मना किया था कि देखो, तुम अपने बाप के यहाँ मत जाओ,क्योंकि उसने तुमको बुलाया नहीं ।बहुत बढ़िया किस्सा है यह ।शिव ने कहा था जहाँ पर विरोध हो गया हो वहाँ बिन बुलाये मत आओ,उसमें कल्याण नहीं हुआ करता है ।पर फिर भी सती गयी ।यह सही है कि उसके बाद शिव ने अपना, वक्ती तौर पर- जैसा मैंने कहा , वह काम खुद अपने-आप में उचित है- बहुत जबरदस्त गुस्सा दिखाया था । और उसकी पलटन कैसी थी । धगधज्जलल्ल्लाट पट्टपावके किशोर चन्द्रशेखरे.... शिव की जो तसवीरें अक्सर आँख के सामने आती हैं वह किस तरह की हैं । जटा में चन्द्रमा है,लेकिन लपटें ज्वाला की निकल रही हैं, धद्धगद हो रहा है । सब तरह की, एक बिना सीमा की किंवदन्ती सामने खड़ी हो जाती है- शक्ति की,फैलाव की,सब तरह के लोगों को साथ समेटने की ।

इसी तरह , जाहिर है , कृष्ण और राम की किंवदन्तियों के भी दूसरे स्वरूप हैं । राम चाहे जितने ही मर्यादा पुरुषोत्तम रहे हों , लेकिन, अगर उनके किस्से का मामला बैलगाड़ी की पुरानी लीक तक ही फँस कर रह जाएगा तो फिर उनके उपासक कभी आगे बढ़ नहीं सकते । वे लकीर में बँधे रह जाएँगे । यह सही है कि राम के उपासक , शायद , बहुत बुरा काम नहीं करेंगे , क्योंकि बुराई करने में भी वे मर्यादा से बँधे हैं अगर अच्छाई करने में मर्यादा से बँधे हुए हैं तो वे दोनों तरफ बँधे हुए हैं । शिव या कृष्ण में इस तरह बन्धन का कोई मामला नहीं है । कृष्ण में तो किसी भी नीति के बन्धन का मामला नहीं है ।और शिव में हर एक घटना खुद इतने महत्व की हो जाती है कि अपनी सम्पूर्ण शक्ति उसमें लगाकर , उस वक्त भी पूरी हद तक पहुँच सकता है या उससे बाहर , और उसके बाद , जैसा कि दक्षिण वालों में तो यह कहीं ज्यादा मालूम होगा , उत्तर वालों के मुकाबले में । तांडव की भी कोई बुनियाद होती है : एक गाढ निद्रा - एकाएक आँख खुली , लीला देखी , लीला के साथ-साथ आँखें इधर-उधर मटकायीं , और देख कर फिर आँखें बन्द हो गयीं । फिर , मुमकिन है , एक दूसरी सतह पर आँखें बन्द हुईं और एक लीला हुई और चली गयी , आँखें खुलीं और बन्द हुईं ।

इससे एक तामस भी जुड़ा हुआ है । शान्ति सतोगुण का प्रतीक है । लेकिन अगर शान्ति कहीं बिगड़ना शुरु हो जाये तो फिर वह तामस का रूप ले लिया करती है । चुप बैठो , कुछ करो मत , धगद्धगद होता रहे , धतूरा या धतूरे प्रतीक की कोई न कोई चीज़ चलती रहे । और हमारे देश में अकर्मण्यता का तो बहुत जबरदस्त दार्शनिक आधार है , कर्म नहीं करने का । यह सही है कि अलग-अलग मौकों पर हिन्दुस्तान के इतिहास में अलग-अलग दार्शनिकों ने कर्म के सिद्धान्त को , अपने हिसाब से , समझाने की कोशिश की है । लेकिन बुनियादी तौर पर हिन्दुस्तान का असली

कर्म-सिद्धान्त यही है कि जहाँ तक बन पड़े अपने-आप को कर्म की फाँस से रिहा करो । यह सही है कि जो पुराने संचित कर्म हैं , उनसे तो छूट सकते नहीं , उनको तो भुगतना पड़ेगा , वे तो और नये कर्मों में आएँगे ही , लेकिन , कोशिश यह करो कि नये कर्म न आएँ । हिन्दुस्तान की सभ्यता का यह मूलभूत आधार कभी नहीं भूलना चाहिए , कि नये काम मत करो , पुराने कामों को भुगतना ही पड़ेगा और जब कामों की श्रृंखला टूट जाएगी तभी मोक्ष मिलेगा । और शिव जैसी किंवदन्ती , और इस तरह के विचार के मिल जाने के बाद , कई बार तामस भी आ जाया करता है - उसके साथ - साथ एकाएक कोई विस्फोट हो जाया करता है यानी जिसके आगे और पीछे कुछ हैं नहीं , नतीजा निकले या न निकले , क्योंकि जहाँ हर एक कर्म अपने औचित्य को अपने आप में रखता हो और न आगे है न पीछे है , वहाँ , अगर किंवदन्ती कहीं बिगड़ गयी तो यह सम्भावना हो जाया करती है कि विस्फोट हो जाये । उसका आगे है न पीछे है और न ही कोई तात्पर्य है । फिर , जब किंवदन्तियाँ बिगड़ती हैं , तो वे ,चाहे राम का इलाका हो , चाहे कृष्ण का इलाका हो , चाहे शिव का इलाका हो , बिगड़ती ही चली जाती हैं ।

मैं समझता हूँ , किसी हद तक , मैंने इन तीन किंवदन्तियों के स्वरूप आपके सामने रखे - बड़े स्वरूप । इनके किस्से किसी भी काम के लिए मनोहर हैं और छाती को चौड़ा करने वाले हैं ।जरूरी नहीं है कि कोई उन किस्सों को माने । झूठे हैं तो इससे मुझसे क्या मतलब ? किस्से तो हैं न ! हम उपन्यास पढ़ते हैं कि नहीं पढ़ते । ' हितोपदेश ' और ' पंचतंत्र ' के गंगदत्त और प्रियदर्शन को याद रखते हैं । ये किस्से ऐसे हैं जिन्हें हर एक कौम , अपनी हँसी और सपने को , दिमाग की सतह पर , जो बहुत बुनियादी और गहरी सतह है , उस पर खोद कर रखा करती है । इन किस्सों के बारे में सावधान हो कर रहना चाहिए ।

वह नीलकण्ठ शिव , जिसके हर एक काम का औचित्य उसके अन्दर बना हुआ है । वह मर्यादा पुरुषोत्तम राम और वह योगीश्वर कृष्ण जो लीला करके चन्द्रमा को ताने मारा करता है । ये सब किसी भी आदमी के दिल को बड़ा करने वाले किस्से हैं ।पुराने देश ने इस बात का भी थोड़ा-बहुत इंतजाम किया कि ये किंवदन्तियाँ आपस में न टकराएँ । अगर वे कहीं टकराती हैं , शायद मुमकिन है भी , तो बोलचाल में , कहीं लोगों में गरम बोल-चाल हो गयी हो आपस में । ज्यादा से ज्यादा , मारपीट इस हद तक हुइ होगी कि लोगों ने मूर्तियाँ तोड़ी हों । मूर्तियाँ तो आज भी टूटती हैं और पहले के जमाने में टूटी होंगी ।इसमें आदमी को बहुत सोच-विचार नहीं करना चाहिए ।यह सब तो लीला की तरह चलता रहता है , आँखें खोलो और बन्द करो ।कहीं पर मूर्ति टूट गयी या बन गयी, यह सब तो चला करता है ।ख़ैर । ये इंतजाम किये गये हैं कि तीनों आपस में टकराएँ नहीं ।

और सिर्फ जमुना और सरयू में ही एका करने की कोशिश नहीं की गयी । जब तुलसीदास गये जमुना के किनारे , तो उन्होंने अपना सिर नँवाने से इनकार किया , यह जानते हुए कि सब एक ही

माया है । लेकिन उन्होंने कहा कि भई हाथ में धनुष-बाण लो ,अपनी मुरली अलग रखो तब मैं अपना सिर नँवाऊँगा । तो फिर मुरली अलग हुई , धनुष-बाण हाथ में आया , जमुना और सरयू एक हो गयी। और , हमारे यहाँ के जो गाने-बजाने वाले लोग हैं , उनसे बढ़ कर इन मामलों में कोई और नहीं हो सकते , जो राम को हमेशा जमुना के तट पर होली खिलवा के छोड़ दिया करते हैं ।जमुना के तट पर राम होली खेलें ।तो अब कहो कि ये कौन सी बात है ।सरयू के तट पर कृष्ण जाकर कौन-सी अपनी रास-लीला रचायें ।ये सब चीजें हमारे लेखक कर दिया करते हैं , और लेखक कोई मामूली आदमी थोड़े ही होते हैं , पर हर लेखक नहीं ।बड़ा लेखक बहुत बड़ा आदमी होता है । वह राम को भेज देता है जमुना -किनारे और कृष्ण को भेज देता है सरयू-किनारे ।फिर यह क्यों न सम्भव हो कि हिन्दुस्तानी लोग भी ऐसी किंवदन्ती को अपने आँखों के सामने लायें कि जिसमें शिव अपनी जटा में सिर्फ चन्द्रमा ही नहीं मुरली वाले कृष्ण को लिये हो , और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के साथ तांडव कर रहा हो ।लाने को ऐसी तसवीरें लोग अपनी आँखों में ला ही सकते हैं , शायद आ जाए हिन्दुस्तान में ।

मेरा बिलकुल यह मतलब नहीं था कि कोई उपदेश करूँ । उपदेश मैं कर भी क्या सकता हूँ ।उपदेश करना बेवकूफ़ी होगी ।इसका सिर्फ एक मकसद था कि इन तीन किंवदन्तियों के कुछ पहलुओं को आपके सामने लाना कि जिसमें कुछ किस्से-कहानियों को याद करके आपकी तबियत कुच खुश हो , आप कुछ हँसें और कुछ सपने देखें ।

६ महीने तक मरी हुइ पार्वती को अपने कंधों पर डाल कर ले चलना , यह भी एक अनोखा प्रेम है ।लड़ाई के मैदान में दुनिया के शायद सबसे बड़े दर्शन को गीत के रूप में कह देना , यह भी एक अनोखा दर्शन है । यों हिन्दुस्तान में एक अजीब खूबी पायी गयी है कि अपने दर्शन को उसने गीत के रूप में कहा । और कौमों ने भी इसकी कोशिश की , लेकिन,जिस किसी सबब से हो,उतनी सफलता नहीं मिली । उसी तरह से राम ने भी अपनी ताकत को मर्यादा के अन्दर रख कर अपना काम किया ।जब रावण मर रहा था तो राम ने लक्ष्मण को रावण से राजनीति सीखने के लिए कहा कि जाओ ,सीख कर आओ । पहले नहीं भेजा था ।हर एक चीज का अपना वक्त होता है । कई लोग कहते हैं कि राम बड़ा चतुर था । हो सकता है कि वह चतुर रहा हो ।लक्ष्मण और परशुराम के संवाद में अक्सर ऐसा मालूम होता है कि जैसे बड़े भाई मजे में उकसा रहे हों छोटे भाई को , कि तुम ताना मारो , मैं तो हूँ ही ,अगर मामला बिगड़ेगा तो बचा ही लूँगा, तुम जरा मामला बढ़ाते रहो ।उसी तरह से , शूर्पणखा की मामले में , मालूम पड़ता है कि बड़े भाई साहब छोटे भाई को अगर उकसा नहीं रहे हैं तो कम से कम मजा तो जरूर ले रहे हैं । आप देखते होंगे कि जिन्दगी में भी , जब कभी किसी दल के २ - ३ लोग होते हैं तो वे आपस में चाहे पहले बातचीत हुई हो या न हुई हो , एक ऐसा इंतजाम - सा कर लिया करते हैं कि एक तो दुशमन को जरा शान्त करेगा और अपने आदमी को

जरा डाँटेगा-डूँटेगा तब दूसरा जरा गुस्से में बोलेगा , और फिर दोनों मिल कर उसके ऊपर हावी हो जाएँगे ।ख़ैर । राम ने लक्ष्मण को कभी भी रावण के पास लड़ाई के दौरान नहीं भेजा । जब रावण मर रहा था , तब भेजा । लक्ष्मण लौट कर आया , बोला - रावण तो कुछ बोलने को ही तैयार नहीं । तब राम ने उससे पूछा - तुमने किया क्या था ? लक्ष्मण ने कहा, मैं वहाँ गया और मैंने रावण से कहा कि मुझे राजनीतिशास्त्र बताओ । तब राम ने पूछा - तुम कहाँ खड़े हुए थे । लक्ष्मण ने कहा - कि रावण लेटा पड़ा था , मर रहा था और मैं उसके सिर के बगल में खड़ा हुआ । तो राम बोले - इस तरह से सीखा करते हो , जाओ , पैर के पास खड़े रहो , फिर सवाल पूछो और जवाब माँगो । लक्ष्मण फिर गया , पैर के पास खड़ा रहा तो उसे जवाब मिला । ऐसा बढ़िया - बड़िया किस्से हैं ।

छोटा-सा किस्सा है कि दुश्मन है , बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी गयी और जब दुशमन मर गया तब उसके पास अपना आदमी जाता है , मर गया तब ।पहले नहीं ।मुमकिन है , मेरे किस्से को मेरे ही खिलाफ कुछ लोग इस्तेमाल कर दें और कहें कि तुम इस किस्से को बता रहे हो , तुम्हें जाना चाहिए , लेकिन रावण मरे तब लक्ष्मण जाता है , मरने के पहले नहीं ।और जा कर सिरहाने नहीं खड़ा होना चाहिए , पैताने खड़ा होना चाहिए ।जब बैठो कहीं मेज पर तो देख कर बैठो कि बगल वाले को कोई तकलीफ तो नहीं हो रही है । कहीं अपनी जगह से ज्यादा तो नहीं ले रहे हो वगैरह-वगैरह । ख़ैर ।यहाँ मुझे सिर्फ इतना ही बताना है कि इन किस्सों की एक-एक तफ़सील में ,एक-एक संवाद में , एक-एक बात में मजा भरा है । जरूरी नहीं कि इन किस्सों को आप सही समझें ।जरूरी नहीं है कि आप उसको धर्म मानें । उनको आप सिर्फ उपन्यास की तरह लें ,एक ऐसा उपन्यास जो दस - बीस - पचास हजार आदमिओं तक नहीं , बल्कि जो करोड़ों लोगों तक ५ हज़ार बरसों से चला आया है , और पता नहीं , कब तक चला जाता रहेगा ।